हिन्दी मिलाप
देनी हिन्दी मिलाप, हैदराबाद
रविवार, 15 अप्रैल, 2012

शिव से साक्षात्कार : काशी मरणान्मुक्ति

'काशी मरणान्मुक्ति' शीर्षक के साथ देर सारे पृष्ठों को समेटने वाले, पटपर में प्रतिष्ठित शिवलों के गूढ़ संकेतों से लेकर 'ओम' कथ कथात्मक शिल्प पर दृष्टि पड़ते ही हृदय व मस्तिष्क में एक अनोखी-सी आग जरूर उठी और संपूर्ण काया में त्वरित प्रतिक्रिया हुई। आत्मा मानों सम्मोहित-सी हो गई और हाथों ने स्वयं कर किताब को उठा लिया। अंजस का किताबी कीड़ा जहाँ नई खुराक मिलने से प्रफुल्लित हो गया, वहीं समस्त चराचर जगत के आंतरिक सत्य के रहस्यों से साक्षात्कार करने के लिए आत्मा में नई चेतना जाग गई।

चेतना ऐसी जागी कि पाठन आरंभ किया तो फिर आठों पहर अनवरत मनोमस्तिष्क में शिव भाव की धारा का अनुष्ठान चलता रहा। दिव्य, अलौकिक व आध्यात्मिक रसों से पूर्ण इस रचना ने स्थूल रूप से कहें तो काशी की पंचक्रोशी, पंचतीर्थ सहित चारों धाम व द्वादश ज्योर्तिलिंगों की तीर्थ यात्रा करवाई तो सूक्ष्म रूप में चतुर्वेदिक जगत, परमधाम में भक्त शिवलय से भी साक्षात्कार करवाया।

गुरु की महिमा को व्याख्यायित करने वाले इस उपन्यास का नायक महामृत्युंजय, उपनिषदों के पुनर्जन्म व शिवालयों के पीछार्ग से कथावाह, संगम किनारे स्थित घाटाकाठ के स्मशान में एक जलते शव के दुर्गंध से युक्त वायु में जीवन की प्रथम सांस लेता है। जन्म होते ही माँ अपनी इस जारज संतान को वहीं छोड़ गई थी। लेखकद्वय मनोज टक्कर व रश्मि छाजेड़ ने चित्तांगि से आलोकित होती शिशु-काया की दैवीय्यमान दिव्यता को वर्णित कर कथानक के रहस्यात्मक जाने-वाले को कुनन गुरु किया जो फिर वह चाहे काशी विश्वनाथ के गर्भगृह में उपस्थित पुजारी द्वारा शिशु के ललाट पर भस्म त्रिपुंड खींचना हो या श्रीमहर्षिका महाश्मशान से गुजरती माता को वह अहसास होना कि एक रहस्यमय हाथ जैसे उसकी गोद से शिशु को छीन रहा है; सीत क्षीण माता का चिता की भस्म में लोटना हो या तत्पश्चात माता का चिता की अग्नि को देखकर सशस्त्त हो होलना या फिर विभिन्न महात्माओं के रूप में आते परम गुरु और गुरु के मुख से झरती शिव की वाणी हो.. साक्षात शिव द्वारा हिमालय की गोद में किये गये महामृत्युंजय के दीक्षा संस्कार से जहाँ प्रकाशमय शिव-चेतना में रहस्य-रोमांच व जिज्ञासा की रसधार उंड़ेली है, वहीं कबीर व रैदास के राम से लेकर तुलसीदास जी के राम तक, रामानंद, शंकराचार्य, रीवेराज, विवेकानंद व साईं बाबा आदि के दर्शनों के साथ-साथ पेर-पुराण, प्रभावी रूप से करवाती है।

वसीठा, रावण, इब्राहाम पाचा, बुद्ध धारा व बुद्धेस से पंचतत्वात्मक रिश्ता, तो कबीर, तुलसी व परम गुरु साक्षात शिव से भावात्मक रिश्ता इस कथानक को रचनात्मकता के चरम सीमे पर ले जाता है।

इस्लाम के बाबामऊ स्मशान में शिवत्मि के समीप प्रथम सांस लेने वाला महा, काशी के श्रीमहर्षिका महाश्मशान में बाबाव का कार्य करता है। शिवस्वरूप गुरु की प्रेरणा से वह चार वर्षों के बाद ज्योतिर्लिंगों की तृतीय धारा करता

एक परिचयात्मक लेख

है और अंत में काशी में आकर ही मृत्यु को प्राप्त होता है। शिवोधारा के दौरान अर्जित ज्ञान-योग व आत्मज्ञान से उसकी मरणान्मुक्ति काशी में संभव हो पाती है और

काशी विश्वनाथ के प्रणिनार की एक झांकी आइए देखते हैं-

आज महाश्मशान श्रीमहर्षिका पर विभावरी, सिद्धपुंडधारित, जोहिताक्षा तपुपपात, काशी विश्वनाथ मरणागत जनों के शोकगान का वर्णन कर स्वयं के धारण कर एवं सीधे वेदों का प्रतिपादन करते अमर अनादर-नार निर्वाहित कर रहे हैं-

"मेरे परम अनुग्रह से ही जीव मुझ शिव के लोक में निवास करता सालोक्य-मुक्ति को प्राप्त होता है, तो कोई जीव मुझ शिव का रूप पा सारूप्य मुक्ति की पात्रता धारण करता है। किसी जीव का भाग्य उसे मेरे सांनिध्य में रख सामीप्य-मुक्ति का वर देता है, तो कोई विरली आत्मा मुझ शिव से एक होती सायुज्य-मुक्ति को प्राप्त होती है।"

12-13 पन्नों वाले अध्यायवार अध्याय रचना को तुलनिपूर्ण बनाते हैं। परम गुरु शिव सगुण साथ नहीं है, किंतु महा, शिव को साथ ही लेता है। हर अध्याय में उंच व साथ रस में यह कई महान आत्माओं से मिलता है। उनसे ज्ञान प्राप्त करता है। किन्तु हर बार ज्ञान देने वाले गुरु उसे अंत में कह देते हैं कि 'पर बाद रख में तेरा गुरु नहीं हूँ।' कथोन व रश्मि की इस रचना के नायक का गुरु तो परम गुरु शिव हैं, और परम ज्ञान तो उसे उन्हीं से मिलने वाला था। इस तथ्य के साथ पूर्ण रूप से न्यायोचित व्यवहार इस रचना में लेखकद्वय ने किया है।

इस रचना के पठन से जागृत हुई चेतना में अनुभूति स्फुरित हो रही है कि जीवन जीना जितनना आनंददायक होता है, मरण को भी उतना ही आनंदमय बनाया जा सकता है। शिव के निनार परम सुख की प्रेरणा तो देते हैं, पर अंत में मस्तिष्क में यही कौंधता है कि कहीं कोई अदृश्य सत्ता कह रही है कि शिव को पाना है तो अपनी काया को काशी मान उसके अंदर के शिव को पहचान, अक्षरों में तो तूने सुंदरम् शिव से साक्षात्कार कर लिया, किंतु साक्षात् शिव तेरे भीतर है, उसे पहचान-

' और बाद रख यहीं तेरे गुरु हैं।'

- कुमुद जैन

समीक्षात्मक टिप्पणी

यह एक ऐसे पात्र की कथा है, जो स्मशान में पैदा होकर एक, दूसरे स्मशानघाट तक की लोकयात्रा पूरी करता है। और इस यात्रा के दौरियान उसे तमाम गुहायों की धूल फाँकनी पड़ती है। महान वह जानने के लिए कि वह काशी और कहीं नहीं, स्वयं उसके भीतर है, जहाँ पहुँच कर ही मुक्ति मिलती है। यही ज्ञान वह ज्ञान साबत कभी कबीर को हुआ था और उन्होंने इस काशी की महिमा को यह कह कर पूजीती दिया था कि-

जो कबिरा काशी मरै तो रामे कौन निहोरे..
और वह अंत समय काशीनाथ के मंगहर चले गए थे।

'काशी मरणान्मुक्ति' नामक यह महाग्रंथ आद्यान्त यह अहसास करता रहता है कि अपनी ही काया काशी है और उसी की माया शिव प्रपंच और निर्वाण से भेंट करती है। काशी, धर्म-दर्शन-अध्यात्म की संगम नगरी है। माना जाता है कि यहाँ मर जाने भर से मोक्ष मिल जाता है। यहाँ स्थित सोपधान आपर, इस बात का साक्षी है, जिसके नीचे लेटकर अपनी ज्ञानीया अपनी इच्छा से समाधि कर कई लोग काशी मरणोन्मुक्ति को प्राप्त हो चुके हैं। यह शोध, जिसकी पहाड़ में पूरे लंबित व्यक्ति को तमाम बाधाएं झेलने पड़ते हैं।

अंतिम टिप्पणक है तो बस यह कि आर्थान गुहायें और बाबाधें वाली यह किताब जिस तरह की भाषा-शैली में लिखी गई है, वह आम पाठक के लिए पर से गुजर जाने वाली है। लेखकद्वय जो कहना चाहता है, वह संप्रेषित हो सकने वाली भाषा में नहीं कह पाया है।